Juni Khyat **ISSN: 2278-4632**
(UGC Care Group I Listed Journal) **Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020**

यहां पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि

वैश्वीकृत हिंदी कथाओं के संदर्भ में

डॉ चमकौर सिंह
सहायक प्रोफ़ेसर हिंदी विभाग
ए एस कॉलेज फ़ॉर वूमैन खन्ना, पंजाब्।

साहित्यक दृष्टि में वैश्विक संस्कृति को अपनाना वैश्वीकृत होना है। इच्छाओं की परिपूर्ति के लिए संघर्षशीलता की प्रवृति ही इंसान को बाकी जीवों से श्रेष्ठ बनाती है। मनुष्य का शहरीकर्ण हो, चाहे राष्ट्रीयकरण, चाहे वैश्वीकरण , सभी का मूलाधार आर्थिक उन्नति है। वैश्वीकरण के होने का मतलब है, आपकी जीवनचर्या पर वैश्विकता का प्रभाव हो जाना। फिर वो चाहे आपकी भाषा पर हो, चाहे आपके खाने पीने पे हो, चाहे आपकी विचारधारा पर हो, मूलतः जब आपके चिंतन पर वैश्विक मूल्यों का प्रभाव दिखाई दे तो समझ लें, आपका वैश्विकर्ण हो चुका है। भारतीयों के वैश्वीकृत होने का मूलाधार भी आर्थिक उन्नति ही है, वैश्विकर्ण का प्रभाव ऊपर से नीचे की ओर पुहंचा है।

"*इंग्लैंड में उन्नीसवी शताब्दी महान परिवर्तनों की शताब्दी थी।लगभग पूरी शताब्दी वहां परिवर्तनों की ऐसी आंधी चलती रही के जीवन और समाज के सारे प्रसंगों पर परिवर्तन की चेतना हावी रही। पूरी शताब्दी वहां पर पूरे वेग के साथ ओद्योगिक क्रांति होती रही और सामाजिक जीवन के ऊपरी तौर तरीकों में ही नहीं, मानव के शूक्ष्म भावयंत्र में भी परिवर्तन होते रहे।*

इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप प्रकृति के अनेक बंधन ढीले हो गए। राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्रों में लोगों के रहन-सहन और सोच विचार पर इन परिवर्तनों की प्रतिकिर्या हुई जिस के प्राथमिक विस्फोट के रूप में फ्रांस में राज्यक्रांति हुई थी।"**1**

भारत में चाहे इन परिवर्तनों का असर वैसे नहीं हुआ जैसे पश्चिम में, लेकिन इस बात से मुनकर नहीं हुआ जा सकता के भारत पश्चिमी सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों से प्रभावित नहीं हुआ। 1991 में नई आर्थिक नीति के अपनाने पर भारीतय लोगों का वैश्वीकरण होना शुरू हो गया, कारण था भारतीय अर्थवयवस्था में खुले व्यापार को अनुमति देना। आर्थिक उदारीकरण की इस नीति के तहत अंतराष्ट्रीय कंपनियों का आगमन भारत में हुआ, महानगरों में बड़े बड़े शॉपिंग मॉल खुलने शुरू हुए, नए नए ब्रांड भारतीय

 Copyright ⓒ 2020 Authors

बाजारों में आकर भारतीय लोगों को आकर्षित करने लगे। उदारीकरण के परिणाम स्वरूप भारतीय जन मानस का सम्बंध सीधे विश्व के साथ हो गया। विदेशी उत्पादों के साथ ही उनकी संस्कृति भी भारतीय बाजारों में आनी शुरू हुई। उदारीकरण की नीति से भारतीय अर्थवयवस्था में जबरदस्त उछाल हुआ, जिस का परिणाम हुआ लोगों के हाथ में ज्यादा पूंजी का आना और उनका सम्बन्ध विदेशी उत्पादों से बढ़ना।

"*औद्योगीकरण के फलस्वरूप न केवल राष्ट्रीय आर्थिक विकास को गति प्राप्त हुई बल्कि देश में एक विशिष्ट संस्कृति का भी उदय हुआ ,एक ऐसी संस्कृति, जिसने भारीतय भूगोल को समाजशास्त्र में परिवर्तिति किया, एक ऐसी संस्कृति जिससे भारतीय समाज के मूल प्त्य्यो में नवीन धाराओं का जन्म हुआ, एक ऐसी संस्कृति जिसने स्थानीय और परंपरागत मूल्यों और व्यवहांरो ससे हटकर राष्ट्रीय धरातल पर अधुनिक ढंग से सोच की शुरुआत की* "2

उदारीकरण और भूमंडलीकरण के बाद संचार माध्यमों का त्वरित विकास-विस्तार हुआ। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के पूँजी प्रवाह ने मीडिया ख़ासकर प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रोफ़ेशनल शब्द को जोड़ दिया है। मीडिया के प्रोफ़ेशनल हो जाने से इस की अवधारणा व्यापक रूप से बदली गई, जनसंचार माध्यमों के विभिन्न आयामों ने समाज के सभी वर्गों को प्रभावित किया है। टेलीविजन क्रांति और नए चैनलों की बाढ़ ने समाज के हर वर्ग को, विश्व की पहचान करवाई। खासकर महिलाओं को शिक्षित व जागरूक बनाने में इसकी भूमिका की अनदेखी नहीं की जा सकती है। प्रिंट मीडिया में नए क्षेत्रों में नए संस्करण खुलने से उन पाठकों तक भी अख़बार पहुँचने में कामयाब हुए हैं जहाँ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अभी तक नहीं पहुँच पाया था।आर्थिक उन्नति के साथ-साथ , शिक्षा का भी प्रचार प्रसार होना तेज हो गया,जिस से सामाजिक चेतना का विकास हुआ, युवावर्ग पर पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव पड़ना शुरू हुआ, भारतीय युवा युंग,फरायड, शेक्सपियर , लेनिन, कार्लमार्क्स और रूसी साहित्य से प्रभावित होने लगा। भारतीय युवा अपने जीवन को विश्व के संधर्व में परिभाषित करने लगा। आर्थिक प्रगति ने गांवों को शहरों की तरफ,शहरों को महानगरों की तरफ और महानगरों को विदेशों की तरफ आकर्षित करना शुरू किया। जिससे समाज जो गांवों, शहरों, महानगरों और विदेशों में विभाजित था, एक होना शुरू हो गया I यहीं से भारतीय समाज की वैश्वीकृत होने की शुरुआत हो जाती है। और इसी वैश्वीकरण का प्रभाव महानगरों से लेकर गांवों के लोगों तक विभिन्न स्तर पर दिखाई देने लगा। भारतीय लोग हमेशा से पाश्चात्य देशों का अनुसरण करने में आनंद की अनुभूति करते रहे हैं, शिक्षा और जनसंचार के माध्यम से विभिन संस्कृतियों का एक होना स्वाभिक ही था, परिणामस्वरूप पाश्चात्य रीति रिवाज भारतीय रीतिरिवाज बनने शुरू हो गए,फिर वो चाहे वेलेंटाइन डे हो, फादर डे हो ,मदर डे हो, क्रिसमिस इत्यदि हो , तथा भारतीय युवाओं को भारतीय परम्पराएं खोखली सी प्रतीत होने लगीं।

2000 तक आते-आते भरतीय लोगों का रुझान विदेशों की तरफ तेजी से बढ़ने लगा। उच्चवर्ग कनाडा, अमेरिका, इंग्लैंड, इटली तथा मध्यम वर्ग खाड़ी देशों की तरफ पलायन करने लगा। विदेशी संस्कृतियों के खुले पन ने भारतीय लोगों को आकर्षित किया। तथा भारतीय लोग उन परम्पराओं, रीतिरिवाजों को अपना कर ,मॉडर्न कहलाने में फख्र महसूस करने लगे।

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

हिंदी कथा साहित्य पर विश्व दर्शन का प्रभाव

साहित्य समकालीन सामाजिक परिस्थितियों का आईना होता है, और हिंदी साहित्य में भी वैश्वीकरण के सामाजिक प्रभाव को देखा जा सकता है। फिर वो चाहे कविताओं में हो, नाटकों, उपन्यासों, कहानियों, संस्मरणों में हो। रचनाकारों ने वैश्वीकरण के भारतीय जीवन पर पड़े प्रभावों को अपनी पैनी दृष्टि से देखने की कोशिश की है।

चारों तरफ से भारत पर्वर्तित हो रहा था, यह परिवर्तन जैसे उद्योग और आर्थिक दृष्टियों से हो रहा था, वैसे ही सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक दृष्टियों में भी हुआ और इसका असर साहित्यिक मनोदशा पर भी पड़ा।

भारतीय व्यक्ति जैसे-जैसे बदल रहा है, वैसे-वैसे उसकी भाषा भी बदल रही है। वह समय दूर नहीं जहाँ पर भारत की सारी भाषाएँ एक-दूसरे के साथ घुल मिलकर एक नया रूप धारण करेंगी। विविध कार्यों से एक आदमी कई गाँवों, शहरों और विदेशों में पहुंच रहा है। देश विदेश भाषाओं की सीमाओं को लांघ रहे हैं। ऐसी स्थिति में साहित्य भी बदले तो आश्चर्य नहीं लगेगा। वर्तमान का वर्णन और भविष्य का संकेत साहित्य है। कुछ साल पहले साहित्य में पीड़ित-शोषित वर्ग का चित्रण नाम मात्र रहा परंतु आज उस की बाढ़ आ चुकी है *मोहन राकेश की* 'मलवे का मालिक', राजेन्द्र यादव की' जहां लक्ष्मी कैद है', शिवप्रसाद सिंह की 'नन्ही', मार्कण्डे की 'गुलरा के बाबा', भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत' अमरकांत की 'डिप्टी कलक्ट्री' कृष्णा सोबती की 'सिक्का बदल गया', कमलेश्वर की 'देवी की माँ'। जैनेन्द्र की' राजीव और उसकी भाबी', 'बिल्ली बच्चा', 'एक रात', नीलम देश की राजकन्या', इतियादि कहानियों में सामाजिक समस्याओं और व्यक्ति के भीतर की समस्याओं को छूने की कोशिश की है, .यशपाल के सम्पूर्न् सहित्य पर मार्क्सवाद का प्रभाव दिखाई देता है

*"वास्तव में दो महायुद्धों ने संसार भर को जैसे झकझोर कर रख दिया। आज के लेखक ने पूरे के पूरे राष्ट्रों को दूसरी जातियों अथवा राष्ट्रों को अंधी क्रूर पाशविकता का व्यवहार करते हुए, एक अमानवीय कठोरता से उसे पद दलित करते हुए, उनका अस्तित्व तक मिटते हुए देखा, और अनजाने ही उसकी पुरानी मान्यताएं बदल गई। ऐसी पाशविकता, ऐसी क्रूरता तो पहले कहानियों में कहीँ नहीं थी। साहित्य में तो क्रूर से क्रूर व्यक्ति के मन में भी ममता को खोज दिखाया जाता था। इस सामूहिक पाशविकता का कारण जानने के लिए समूह की इकाई, व्यक्ति ,उसकी उत्पति, विकास, उसके मनोभावों और उद्द्योगों की ओर लेखक की दृष्टि गई। डार्विन, मार्क्स, ओर फ्रायड ने इस काम में उसका पथ निर्देशन किया। एक ने मानव की उत्पत्ति, दूसरे ने उसके क्रियाकलाप, और तीसरे ने उसके मनोविज्ञान के संबंध में पुरानी धारणाओं को बदल दिया, और मानव के कृत्यों का कारण, पशु से उसके विकास, मानव-समाज के ऐतिहासिक और आर्थिक यथार्थताओं अथवा उसके विकसित या अविकसित मन की गहराइयों में खोजा जाने लगा।"*3

प्रेमचन्द ने कहानी को एक दिशा दी, और उनके बाद आनेवाले लेखक उस दिशा में और भी बहुत आगे तक जा सकते थे। परन्तु प्रेमचन्द के तुरन्त बाद आनेवाली लेखकों की पीढ़ी ने अपनी दिशा बहुत बदल ली। यह पीढ़ी नई-नई पाश्चात्य साहित्य के सम्पर्क में आयी

Copyright ⓒ 2020 Authors

थी। उस साहित्य की तब तक की उपलब्धियाँ इस पीढ़ी के लिए आदर्श बन गयीं। कुछ लेखकों ने प्रेमचन्द के शिल्प में त्रुटियाँ देखीं और कुछ ने शिल्प को ही सबकुछ मानकर उस क्षेत्र में विकास को ही सफलता की कसौटी मान लिया। जो अन्यत्र लिखा जा चुका था और बहुत सुन्दर था, उसके स्तर तक पहुँचने का प्रयत्न किन्हीं लेखकों के लिए सबसे बड़ा आकर्षण बन गया। जिस लेखक को आस पास के जीवन की अपेक्षा अपने शेल्फ में रखी हुई पुस्तकें अधिक प्रेरित और अनुप्राणित करती थीं, वह भला प्रेमचन्द के मार्ग पर क्यों बढ़ता? परिणामत: इस काल में कहानी की भाषा के परिमार्जन और उसके रूप विधान की ओर अधिक ध्यान दिया गया। इस दिशा में जैनेन्द्र और अज्ञेय की देन का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है। परवर्ती कहानीकारों ने जब इन लोगों की लकीर को छोड़ा तो वे भाषा और शिल्प के क्षेत्र में इन के प्रभाव को आत्मसात करते हुए ही आगे बढ़े।

इस पीढ़ी के प्रमुख लेखकों में यशपाल दूसरों से काफ़ी अलग रहे। उन्होंने मध्य वर्ग के जीवन की विसंगतियों को लेकर उन पर आक्षेप करते हुए कई ज़ोरदार कहानियाँ लिखीं। परन्तु यशपाल का यथार्थ एकांगी यथार्थ था, जिसमें मनुष्य के सौन्दर्य और उसकी उदात्त वृत्तियों को आँख से ओझल रखा गया। यशपाल को नग्नता के चित्रण का बहुत आग्रह रहा, जो कई जगह एक फोबिया-सा प्रतीत होता है। क्या केवल कुत्सित मात्र ही यथार्थ है? क्या उस मध्यवर्ग के जीवन में जो जल्दी-जल्दी अपनी कुंठाओं की केंचुलियाँ तोड़ रहा है, कोई भी उजली रेखा नज़र नहीं आती? जिस मनुष्य से उस की मनुष्यता का विश्वास ही छीन लिया जाएगा, उसे हम बदल कैसे सकेंगे? मध्यवर्ग के जीवन में केवल खोखलापन और आडम्बर ही नहीं है, उसमें और भी बहुत कुछ है, जो सजीव है और विकार रहित है, और जिसकी रक्षा की जा सकती है। मध्यवर्ग में 'प्रतिष्ठा का बोझ' की सास-बहुएँ ही नहीं हैं, जिनकी एकमात्र समस्या उनकी शारीरिक भूख है, बल्कि वे स्त्रियाँ भी हैं जो धागे बीन-बीनकर अन्धी हो जाती हैं, केवल इसलिए कि अपने बच्चे को दस जमातें पढ़ा सकें। यशपाल के तीखे व्यंग्यों में यदि साथ ही उतनी सहानुभूति मिली रहती तो उनकी रचनाओं का महत्त्व अब से कहीं अधिक हो सकता था.

हरपाल सिंह अरुष की कहानी "कठघरे में औरत" वैश्वीकरण के प्रभाव से युक्त कहानी है, जिसमें शब्दावली अपना साहित्यक रूप छोड़कर अंग्रेजी से मेलजोल करती दिखाई देती है जिसके पात्र, पति महोदय, जो पाश्चात्य दृष्टिकोण तथा खुलेपन को अपनाए हुए, अपने मनोभावों को आधुनिक हिंदी भाषा, जिसमे अंग्रेजी का बड़ा हाथ है, में अभिव्यक्त करता है।

अदालत के सामने पति अपनी पत्नी से बिगड़े संबंधों का आधार बताते हुए कहता हैं *"सरकार यह किसी भी प्रकार के संबंध को सेलिब्रेट नहीं करती। इनवर्ड या आउटवर्ड। किसी को भी ऐसे नहीं के संबंधों में थोड़ा बहुत जोश हो सके। इनवर्डस के बारे में...क्या कहूँ।" 4*

और हरपाल सिंह की कहानी यह भी बयां करती है के आधुनिक भारतीय मनुष्य मानसिक स्तर पर आधुनिक हुआ है, (आधुनिक होने से हमारा तात्पर्य मनुष्य पर वैश्विक संस्कृति का प्रभाव होना है) साथ-साथ सामाजिक जीवन में भी पाश्चात्य विचारधारा को अपनाए हुए है, भारतीय संस्कृति में शादी को सात जन्मों का साथ माना जाता है, क्योंके रिश्ते भारतीय दर्शन में आत्मिक माने जाते हैं न के व्यवहारिक। खुलेबाज़ार की प्रतिस्पर्धा में आज का मनुष्य

 Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

व्यवहारिक ज्यादा हो चुका है, तथा वैयक्तिकता आज के मनुष्य की परम् उच्चतम प्रवृति बन चुकी है, ऐसे में रिश्तों से ज्यादा खुद की फ़िकर रहती है।आज भारतीय शादियां एक तरह से कॉन्ट्रैक्ट मेर्रिज बन चुकी हैं, जबतक यह रिश्ता आप की इच्छाओं के अनुरूप चलता रहता है आप इसमें टिके रहते हैं यहां पर स्थितियाँ प्रतिकूल लगी तो मूवऑन कह कर रिश्तों को विराम दे दिया जाता है। "कठघरे में औरत" भी इसी अनुभूति को प्रदर्शित करती हुई दिखाई देती है यहां पति पत्नी से अलग होने का कारण पत्नि का स्कूटर पर जाते हुए बेल्ट की जगह कंधे पर हाथ रखना, खाना बनाते हुए रोमांटिक गीत गाना, तथा आपसी संबंध बनाते हुए मन से सहयोग न देना मानता है।

"इतना समझाने- कहने और बताने में पतिमहोदय के माथे पर पसीने के लोट बहने लगे। अपने कीमती कोट की बहौलियों से पोछतें हुए वह अपनी बात पूरी कर सका।पत्नी से नहीं रुका गया- आप देख ही रहे हैं, इनकों पसीना पोंछने की संस्कृति की गंध तक नहीं छू सकी है, कह ही गयी।"5

पत्नी का मात्र एक वाक्या ही पति -पत्नि के आपसी संबंधों को दर्शा देता है, " *जिस व्यक्ति को पसीना पोछने का ढंग नहीं पता उसे रिश्तों को निभाना कहाँ आएगा* ", कथाकार पत्नी का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण कर आधुनिक दंपती के मानसिक धरातल को प्रदर्शित करता है।

वैश्विक साहित्य पर अनुवाद का प्रभाव

रूसी, अंग्रेजी साहित्य के साथ अनुवादिक संवाद के बिना वैश्विकर्ण का स्वरूप संभव ही नही। संवाद ही वह शक्ति है जिसके माध्यम से मनुष्य -मनुष्य को समझता है। वैश्विक संर्पक की स्थापना हेतु अनुवाद की उपयोगिता स्वयं सिद्ध है साहित्य पर्त्येक संस्कृति का आईना होता है, वैश्विकर्ण का मूल आधार विभिन्न संस्कृतियों की वैचारिक समानता है, और समानता की स्थापना के लिए साहित्यक अनुवाद का महत्व और अत्यधिक हो जाता है। और ऐसे में वैश्विक साहित्य की उपलब्धता का आधार एक मात्र अनुवाद ही हो सकता है।

हिंदी भाषा में अंग्रेजी सहित विदेशी भाषाओं के बीच प्रचुर मात्रा में अनुवाद हुआ है. वर्षो तक अंग्रेजो के अधीन रहने के कारण हमारे यहाँ अंग्रेजी से अनुवाद की प्रमुखता रही है. लंबे समय तक उपनिवेश रहने के कारण भारत की आधुनिक सभ्यता अनूदित सभ्यता है. आज विभिन्न संस्कृतियों के मिलन में अनुवाद अहम भूमिका अदा कर रहा है

"वैश्वीकरण के संदर्भ में अनुवाद आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, औद्योगीकरण, जातीय विविधता और बहुसांस्कृतिकता के पाठ का निर्माण करने वाला मुख्य घटक बन गया है, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय संचार में उसकी महती भूमिका है. अभिप्राय यह है कि बहुत अधिक अनुवाद लक्ष्य भाषा समाज के भीतरी स्वरूप को भी प्रभावित करता है. भारत इस का जीवंत उदाहरण है, कि किस प्रकार हम क्रमशः अनूदित सभ्यता और अनूदित संस्कृति बनते चले गए. इसराइल के अनुवाद शास्त्री इतमार ईवेन जोहार ने कहा है कि अनुवाद किसी भी भाषा व साहित्य की आतंरिक बहुआयामी प्रणाली में ही बदलाव ला देता है जिस से उस

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

भाषा का ढाँचा और मुहावरा तक बदल जाता है. मानना होगा कि पिछले डेढ़ सौ वर्ष में हिंदी के साथ भी ऐसा ही हुआ है."6

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल पर शरुआत से ही विश्व साहित्य का प्रभाव पड़ने लगा था। आधुनिक साहित्यकारों में भारतेंदु, द्विवेदी जी, रामचन्द्र शुक्ल पर वैश्विक चिंतन का प्रभाव दिखाई देता है, उन्होंने पाश्चात्य साहित्य का अनुवाद किया तथा भारतीय जन मानस को वैश्विक संस्कृति के दर्शन करवाए।

"भारतेंदु हरिश्चंद्र ने शेक्सपीयर के नाटक 'मर्चेंट आफ वेनिस' का अनुवाद (दुर्लभबंधु) किया और द्विवेदी जी ने 'सरस्वती में' विभिन्न विषयों के अनुवाद छापकर हिंदी पाठक को दुनिया भर की जानकारी प्रदान करने का अभियान चलाया. रामचंद्र शुक्ल ने जोसफ एडिसन कृत 'प्लेजर्स आफ इमेजिनेशन', हेकेल कृत 'दि रिडिल ऑफ द युनिवर्स' एवं एडविन आर्नाल्ड कृत 'लाइट ऑफ एशिया' का क्रमशः 'कल्पना का आनंद', 'विश्व प्रपंच' और 'बुद्धचरित' नाम से अनुवाद किया. श्रीधर पाठक ने ओलिवर गोल्ड स्मिथ कृत 'द हर्मिट' और' डेसरटेड विलेज' को 'एकांतवासी योगी 'एवं' ऊजड ग्राम' के रूप में अनूदित किया. प्रेमचंद ने भी लियो टालस्टाय की रचनाओं को हिंदी में लाने काम किया. इन बड़े और युगांतरकारी रचनाकारों के अनुवाद कार्य के प्रति रुझान का परिणाम यह हुआ कि धीरे धीरे हिंदी में विश्व साहित्य के अनुवाद की एक समृद्ध परंपरा बन गई।"7

इसी परंपरा में भीष्म साहनी रूसी साहित्य का हिंदी अनुवाद करते हैं, नामवर सिंह , हरिवंशराय बच्चन, रूसी कविताओं का अनुवाद करने के साथ साथ शेक्सपीयर के नाटकों का भी अनुवाद करते हैं। रामधारी सिंह दिनकर डी एच लारेंस की कविताओं का हिंदी में अनुवाद करते हैं. तथा अन्य रचनाकारों में रांगेय राघव, निर्मल वर्मा, कुंवर नारायण, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव, गंगा प्रसाद विमल, विष्णु खरे, अमृत मेहता, अभय कुमार दुबे, प्रभात नौटियाल, उदय प्रकाश, मुद्राराक्षस, सूरज प्रकाश, नीलाभ और कृष्ण कुमार जैसे अनेक रचनाकारों ने पाश्चात्य साहित्य का हिंदी अनुवाद कर वैश्विक सांस्कृतिक सांझ बनाने में अग्रणीय योगदान दिया है।

हिंदी फिल्मों पर वैश्विकर्ण का प्रभाव

किसी भी देश की फिल्में उस देश की संस्कृति की झलक होती हैं। 1913 से **राजा हरिश्चन्द्र** फ़िल्म से लेकर आज की फ़िल्म **थप्पड़** तक हम भारतीय सिनेमा में आए कलात्मक और भावात्मक परिवर्तनों को देख सकते हैं। चलचित्र मनुष्य की मनन शक्ति में हमेशा तीव्रता से तथा लंबे समय तक टिके रहते है। इसी लिए रूपहले पर्दे की फिल्में ,किताबों से ज्यादा बड़ा,अपना दायरा बना लेती हैं। भरतीय फिल्मों पर विश्व का प्रभाव आरम्भ से ही रहा है, बल्कि पहली हिंदी फिल्म राजा हरिश्चन्द्र को बनाने की प्रेरणा भी दादा साहब फाल्के को विदेशी चलचित्रों से मिली।

दादा साहब फालके ने अपने लंदन प्रवास के दौरान ईसा मसीह के जीवन पर आधारित एक चलचित्र देखा। उस फिल्म को देख कर दादा साहेब फालके के मन में पौराणिक कथाओं पर आधारित चलचित्रों के निर्माण करने की प्रबल इच्छा जागृत हुई । स्वदेश आकर उन्हों ने राजा हरिश्चंद्र बनाई जो कि भारत की पहली लंबी फिल्म थी और 03 मई 1913 में प्रदर्शित हुई। ध्वनि रहित होने के बावजूद भी उस चलचित्र ने लोगों का भरपूर मनोरंजन किया और दर्शकों ने उस की खूब प्रशंसा की। फिर तो चल चित्र निर्माण ने भारत के एक

Copyright ⓒ 2020 Authors

उद्योग का रूप धारण कर लिया और तीव्रता पूर्वक उसका विकास होने लगा।

आधुनिक फ़िल्म से जुड़े लोगों पर फिर वो चाहे अभिनेता हों चाहे निर्माता, सभी पर विश्व सिनेमा का प्रभाव दिखाई देता है।

देव डी, गुलाल, ब्लैक फ्राइडे जैसी फिल्मों के निर्देशक अनुराग कश्यप पर विश्व सिनेमा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है,

अनुराग कहते हैं, *"1993 में इंटरनेशनल फिल्म फ़ेस्टिवल ऑफ़ इंडिया में मैंने दस दिन में पचास फिल्में देखीं जिस के बाद मेरी ज़िंदगी ही बदल गई. उन फिल्मों का मुझ पर बहुत असर पड़ा. मैंने निश्चय कर लिया कि मैं फिल्में ही बनाउंगा और तीन महीने बाद मैं मुम्बई में था."8*

विशाल भारद्वाज की फिल्मों की कहानियां विदेशी कहानियों से प्रेरित रहीं हैं ,फिर वो चाहे ओमकारा हो, कमीने हो, चाहे मकबूल हैदेर। लीक से हट कर फिल्में करने वाले अभिनेता अभय देओल पर भी विश्व सिनेमा का प्रभाव रहा है, सर्बियाई निर्देशक ऐमिर कुस्तरी का की फिल्म लाइफ इज़ ए मिरेकल, ब्लैक कैट व्हाइट कैट और द अंडरग्राउंड अभय देओल की पसंदीदा फिल्में हैं, स्पेनिश फिल्म मेकर पेद्रो अलमोदोवार, इरानी फिल्म मेकर माजिद मजीदी, और अमरीकी फिल्ममेकर टिम बर्टन और सैम मेनेडिज़ अभय देओल के पसन्दीदा फिल्ममेकर हैं। उनका मानना है कि , *"फिल्मों को किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता. एक अच्छी फिल्म सीमाओं से परे होती है क्यों कि फिल्में भावनाओं के बारे में होती हैं और दुनिया भर में भावनाएं एक जैसी ही होती हैं."9*

यह वैश्वीकरण का ही प्रभाव है के फिल्मों की कथाएं किसी देश की सीमा में बँधी ना रहकर विश्व की कथाएं बन गई हैं। वैश्विक परंपराएँ, देशों की परंपराएँ बन रही हैं। पश्चिमी साहित्य में यदि लिव ईन रिलेशनशिप दिखाई देता है तो वही रिलेशनशिप भारतीय साहित्य में दिखाई देता है, भारतीय फिल्में चीन, अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया में भारत से ज्यादा व्यापार करती हैं, और हॉलीवुड की फिल्में पश्चिम से पहले भारत में रिलीज की जाती हैं, कारण है भारतियों का पश्चिमी मानसिकता को तह दिल से अपनाना। मनुष्य की प्रवृति रही है के वो भविष्य को समझने, और जानने के लिए जन्म से ही जिज्ञासू रहा है, भारतीय मनुष्य मे भी इसी प्रवृति के होते हुए , पश्चिमी संस्कृति की ओर खींचा चला जाता है, विकसित देश होने के कारण , भारतीयों को हमेशा ही पश्चिमी देशों की संस्कृति, उनके दर्शन ने प्रभावित किया है। पश्चिमी फिल्में, कलात्मकता और भावनात्मक स्तर पर भारतीय सिनेमा से 50 वर्ष आगे रही हैं। जैसे जैसे भारतीय समाज शिक्षित हो रहा है, वैसे वैसे उसकी दिलचस्पी पश्चिमी कथाओं में बढ़ रही है।

अवेंजर्स,फ़ास्ट एंड फ्यूरियस जैसी फिल्मों के इंतज़ार भारतीय दर्शक बेसब्री से करते हैं, और 2019-20 में नेटफ्लिक्स, ऐमज़ॉन प्राइम वीडियो, हॉटस्टार जैसे ऑनलाइन वीडियो स्ट्रीमिंग एजेंसीज के आ जाने पर विश्व के सभी रचनात्मक कलाकारों को एक सांझा प्लेटफॉर्म मिला है यहां पर डायरेक्टर, एक्टर्स, दर्शक सभी एक हो गए हैं, और यहां पर देश, नस्ल, जाति, धर्म, दर्शन इत्यादि की सीमाएं टूट चुकी हैं।.

 Copyright ⓒ 2020 Authors

निष्कर्ष

निष्कर्षतः साहित्य इंसानी जीवन का अनुकरण मात्र ही है, और 21 वीं सदी का विश्व एक समाज बन चुका है, विश्व के किसी भी कोने में कोई बदलाव आता है उसका प्रभाव त्वरित रूप से पूरे विश्व पर दिखाई देता है, पश्चिम की समस्याएँ, पूर्व की बन चुकी हैं , और पूर्व की समस्याएँ पश्चिम की बन चुकी है। परिणाम स्वरूप वैश्विक कथाओं का पाठक या दर्शक एक हो चुका है। ऐसे में भारतीय कथाओं में विश्व दर्शन के दर्शन होना कोई आश्चर्य नहीं है।

संधर्व गन्थ सूचि:

1. ओंकारनाथश्रीवास्तव,हिंदीसहित्यपरिवर्तनकेसौवर्ष,राजकमलप्रकाशन,1969,पृष्ठ-3-4
2. *डॉ योगेश अटलआमुख,2007,दिल्ली,प्रकाशन तथापि,परिवेश बदलता:समाज भारतीय,*
3. *उपेन्द्रनाथ अश्क, नईकहानी:एक पर्यवेक्षण,देवी शंकर अवस्थी,नई कहानी संदर्भ और प्रकृति,राजकमल प्रकाशन,2002. पृष्ठ 49-50*
4. हरपाल सिंह अरुष,कठघरे में औरत, कैटर पिलर पब्लिशर्स ,दिल्ली, 2008, पृष्ठ-10
5. हरपाल सिंह अरुष,कठघरे में औरत,कैटर पिलर पब्लिशर्स ,दिल्ली, 2008, पृष्ठ-11
6. डॉ.ऋषभदेव शर्मा-विश्व साहित्य एवं अनुवाद : हिंदी का संदर्भ

   https://groups.google.com/forum/m/#!topic/hindianuvaadak/_IynFXRaUaU
7. डॉ.ऋषभदेव शर्मा-विश्व साहित्य एवं अनुवाद : हिंदी का संदर्भ

   https://groups.google.com/forum/m/#!topic/hindianuvaadak/_IynFXRaUaU
8. https://www.google.co.in/url?q=https://www.bbc.com/hindi/entertainment/2009/10/091027_osian_worldcinema_ar&sa=U&ved=2ahUKEwiEw6v7rpToAhVv7nMBHQ3SD-cQFjAKegQIAxAB&usg=AOvVaw0KTAWBdWAWzuKDk7WGw6Dx
9. https://www.google.co.in/url?q=https://www.bbc.com/hindi/entertainment/2009/10/091027_osian_worldcinema_ar&sa=U&ved=2ahUKEwiEw6v7rpToAhVv7nMBHQ3SD-https://www.google.co.in/url?q=https://www.bbc.com/hindi/entertainment/2009/10/091027_osian_worldcinema_ar&sa=U&ved=2ahUKEwiEw6v7rpToAhVv7nMBHQ3SD-cQFjAKegQIAxAB&usg=AOvVaw0KTAWBdWAWzuKDk7WGw6Dx

 Copyright ⓒ 2020 Authors